

कला समीकृत शिक्षा | F-11

[इकाई - 1 कला समीकृत शिक्षा की समझ]

- * कला शिक्षा क्यं एवं कला समीकृत शिक्षा का समझ
- कला क्या है ?
- कला शिक्षा : अवधारणा व महत्व
- कला समीकृत शिक्षा : अवधारणा व महत्व

⇒ कला - कला एक ऐसा विषय है, जिसमें विचानन, क्रियाओं व प्रतिविधियों के माध्यम से वर्त्तों का अवार्गीण विकास से सहायता मिलती है। इसके अंतर्गत चित्रांकन, नृत्य, नाटक, स्कॉली, शिल्पकारी, रंगाचित्र, रेग करना इत्यादि हैं। इनमें से किसी भी वर्तों द्वारा मावनाओं की व्यवत करना कला कहलाता है।

कला की प्रकृति

- i) अन्य विषयों में समिलित
- ii) सत्तत और विस्तृत प्रकृति
- iii) अनुभवों का समन्वय
- iv) प्राकृतिक प्रकृति
- v) सानातन क अन्य कौशलों को विकसित करने में सहायक

इस तरह हम यह भी कह सकते हैं कि कला एक सिफी एवं विषय नहीं है बरैक

यह अन्य सभी विषयों से जुड़ा हुआ है। इसके द्वारा बच्चे अपने अनुभव, विचार को अपेक्षित रूप से लेवर कर पाते हैं। यह बच्चों को सृजनता और नवीनता के लिए प्रेरित करता है।

⇒ कला शिक्षा - कला शिक्षा जीवन के प्रत्येक पहलु को पूर्णता प्रदान करने की एक प्रक्रिया है। कला शिक्षा वारा बच्चों का मानसिक विकास होता है। यह शिक्षा का मूल आधार किहु होती है। कला शिक्षा के महत्व निम्नलिखित हैं -

- i) बच्चों को यह विचारकर लगता है।
- ii) बच्चों को सृजन करने का अवसर प्रदान करता है।
- iii) बच्चे इस तरीके से अपेक्षित रूप से अपना मान प्रकट कर पाते हैं।
- iv) शिक्षकों को बच्चों को समझाने में इससे मदद मिलता है।
- v) अभिव्यक्ति कोशलों का विकास होता है।
- vi) शहदों के सीमाओं को सुकृत हो जाते हैं।
- vii) बच्चों में ऐजेंसी जागृत होता है।
- viii) समय का उचित रूप से प्रयोग कर पाते हैं।

कला शिक्षा के महत्व को देखते हुए अब सभी विद्यालयों में इसपर जोड़ दिया जा रहा है। इसके द्वारा बच्चे विषय से जुड़ पाते हैं।

→ कला समीकित शिक्षा - इसके अंतर्गत, किसी भी विषय - वर्त्तु की अल्पा - अलग माध्यमों द्वारा सीखाया जाता है। कला के द्वारा बच्चों को कोई भी बोत समझाना आसान होता है। इस माध्यम द्वारा बताई गई बात बच्चों के दिमाग में एक अल्पा ही जाह बना लेती है और उन्हें यह दृष्टि बहुत दिनों तक चाढ़ रहता है प्राथः ऐसा दृष्टि गया है कि जो बच्चे कला संबंधित प्रतिविद्याओं में शामिल होते हैं वो अन्य विषयों में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इससे बच्चे अपने विचारों को व्यष्ट तरीकों से व्यवत कर पाते हैं। इससे बच्चों का समझ विकसित होता है और बुद्धि में विकास होता है। वह किसी भी समर्था की अपनी दंग से हल करने का कीशशा करते हैं। उनमें रचनात्मक कौशलों का विकास होता है। इससे बच्चों के व्योक्ताओं में निष्ठार आता है और उनके दक्षताओं का विकास होता है। और सबसे खास बात यह है कि बच्चे इसमें कर्णि लीते हैं। बच्चे कला के विभिन्न रूप चित्रकला, गीत, संगीत, नाटक सभी में कर्णि लीते हैं। कला सभी अन्य विषयों माध्य, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान सभी में सम्मिलित है। शब्द आत में चित्रों द्वारा ही बच्चों को चाहा की शिक्षा दी जाती है। गणित संकेतों का विज्ञान है, इसमें विभिन्न प्रकार की आकृतियों का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान का शिक्षा बिना चित्र का देना असंभव ही है। सामाजिक विज्ञान में जूहों की संवृत्ति, संसार का संश्चना चित्रों द्वारा ही समझाया जाता

है। मान्योचत्र के माध्यम से चुग्गीलिंग कथानु भूलवासु का ज्ञान दिया जाता है। युद्ध में पाइ गई मूर्तयों द्वारा उस समय का अंतर्कृत का ज्ञान प्राप्त होता है। दौर्टे बन्दों को कहानी, कीविताओं द्वारा सभी विषयों को पढ़ाया जाता है। कला द्वारा सभी विषय सुगम व झुलम बन जाता है।

* समकालीन शैत्रीय कलाओं, कलाकारों एवं कारीगरों से परिचय

समकालीन कला उन कलाओं की कहा जाता है, जो आज हमारे समक्ष प्रचलन में हैं। ऐसी कलाएँ पारंपरिक कलाओं से हटकर नई विकसित कलाएँ होती हैं। जैसे— कल्पनुट्ट कला, ग्राफ क कला इत्यादि।



मधुवनी चित्रकला - विहार की समृद्धि परंपरा मिश्रिला की देखीन चित्रकला को अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि मिली है। प्राचीन चित्रकार उपर्युक्त महारथी माथला चित्रकारी में इतने प्रभावित हुए थे कि उन्हें विहार की लोक चित्रकारी पर शोध और अध्ययन करने में वर्षों का समय लगा गया था। माथला की चित्रकला में माहिता वर्ण की प्रत्येक प्रदृशनता जैसी ही कची मज जमीन, हिती और कृपड़े तक कीमत इस चित्रकारी की कागज, कन्वास पर भी अंकन किया जाता है। पहले उसमें कलाकारों के प्रशंसन में निर्मित प्राकृतिक रंगों के ही प्रयोग होते थे। परंतु अब उसमें हातिम रंगों का उपयोग भी शुल्कर ही रहा ही मिश्रिलांचल की इस लोक चित्रकला की मधुवनी चित्र या मधुवनी पैटर्न्स के नाम से प्रसिद्ध मिली ही माथला चित्रकला में श्री सीता देवी, गान्धर्वा देवी, उषा देवी, अमृता देवी, कपुरी देवी और महासुनदरी देवी को विशेष नाम सह मिली ही जगद्गवा देवी, सीता देवी तथा गंगा देवी को कहा जाता है। 1975, 1981 और 1984 से मातृत भवकार में पढ़माझी भी अलंकृत किया है। कपुरी देवी 1980-81 वर्ष के विहार भवकार में राज्य पुरस्कार, 1983 में श्रीठ शिल्पी पुरस्कार तथा 1986 में नैशनल मैरिट एटीकॉर्ट देकर सम्मानित किया है। कपुरी देवी के कई शूलक्षुर ऐंटिंग जापान के गोसीगावा नगर में लगे हैं। मिश्रिला संग्रहालय में लगे हैं। माथला चित्रकला में तीन प्रमुख रूप दिखाई पड़ते हैं -

मुमि आकल्पन (जमीन पर अल्पना बनाना)
हिती चित्र (दिवार पर की गई चित्रकारी)
पट चित्रण (कपड़े पर चित्रकारी) ।

i) मुमि आकल्पन - इसको पश्चपश प्रायः दर
संस्कृत में रही है महाराष्ट्र की रंगोली
उत्तर प्रदेश के लूज़ लैंब्र की सांकी तथा
राजस्थान की माडना मुमि आकल्पन
के ही रूप है। बिहार में इसे
चौका पूर्ण कहा जाता है, जो पूजा पाठ
के समय कलश अथापना की जगह
अनिवार्य होता है। इसे ही मिश्रला में
अश्रिपन् कहा जाता है। विवाह के
समय के अश्रिपन में, कमल कुन्ही
(कमल का पता) बोस आद के चित्र
बनाये जाते हैं।

ii) हिती चित्र - यह मुमि पर दिवार पर
बनाया जाने वाला चित्र है। इसमें
स्थाइतृत वभी अद्युक्त होता है।
मिश्रलांचल के हिती चित्रों में
सर्वाधिक कलात्मकता को हवर - अकन
में दिखाई पड़ती है। कोहवर चित्रों में
तीन भाग होते हैं -

- १) गोसाई घर (कुल देवता का स्थान)
- २) कोहवर घर (जहो नष्ट होता पहली बार
मिलते हैं)
- ३) कोहवर घर की नीचा (कोहवर का बाहरी
भाग)।

तीनों जगहों पर चित्रांकन के
रूप अल्पा - अल्पा होते हैं। कोहवर का
अकन कोई भी हला ही करती है।

रिच्चाकंन में अनार की डंडी की कलम गबा है जो बनी तुलिका (ब्रह्म) का उपयोग किया जाता है। मिथिला के हिन्दू चित्रों में राघा - कृष्ण की रास लीला, इम - सीता-विवाह, जट - जटीन आदि पौराणिक और लोक कथाओं के चित्रण भी होते हैं।

iii) पट चित्रण - इस चित्रण में मिथिलांचल की रंगीन चित्रकृति को उत्कर्ष पर पहुँचाया है। माना जाता है कि राजा शिव सिंह के कल में पट चित्रण कला की विशेष विकास मिला। विभान्न प्रसंगों के दृश्य कपड़े पर अंकन करने की उस प्रपत्र का ही विकास आज कागज या कनवास पर दिखाई पड़ता है।

मिथिला की प्राचीन चित्रकला के चित्रकार किनारी की द्विश हुआ आवश्यक होता है। दोहरी रेखाओं वाली किनारी में भूली, फल, फल, चिट्ठियों आदि का अंकन होता है। प्राचीन में चित्राकन के लिए प्राकृतिक श्याक्षंब पदाश्री का उपयोग होता था। ऐसी वर्तमान समय में आधुनिक रसायनक रेखों का सी उपयोग होने लगा है।

कपुरी देवी (28-04-1929 -
30-07-2019)

छर - राणी गांव, मण्डवनी,

शिक्षा - सांतवी

विदेश दौरा -

जपान — १ बार

अमेरिका - २ बार

फ्रांस - १ बार

पुरस्कार

1980-81 - विहार सरकार से शण्डा
पुरस्कार

1983 - श्रीमति शिल्पी पुरस्कार

1986 - नेशनल मेरिट स्टिलिफेट

मिशिला पेंटिंग और सजनी आर्ट को
उच्चारी दिलाने में कपुरी देवी का बड़ा योगदान
है। मिशिला पेंटिंग में कचनी और घरनी
दीवों शैलियों का सम्बन्ध उनकी कला के
विशेष बनाता रहा। कपुरी जी मिशिला पेंटिंग
• उकेरते समय प्रायः गीत गाती रहती थी।
जपान से उनका विशेष लगाव था। 1988
में पहली बार वह जपान में अंतर्राष्ट्रीय
वाले भाषी जा इसी गावा मिशिला म्यूजियम
का उद्घाटन करने मुख्य अतिथि के रूप में
अपनी गीतनी भहासुदरी देवी के साथ रही
थी। कपुरी देवी की कला की संस्कृता मुक्त
प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने भी की थी।
कपुरी देवी की एकी मौतीकण इस कला
के प्रचार-प्रसार में लगी हुई है।

* 'कला शिक्षा' से 'कला समीकृत शिक्षा' की ओर: अवधारणात्मक समझ

- बाल कला की समझ
- बच्चों में संसानात्मक क्षमता के विकास
- में कला समीकृत शिक्षा की सूरी मात्रा
- प्रारंभिक उत्तर की पाठ्यचर्चा से कला समीकृत शिक्षा का जुड़ाव

मनुष्य कलात्मक होता है। वो जन्म से ही कलाकार होता है। वो जिस तरह का आवाज़ कुनूता है जूद बोलने का कौशिश करता है। बच्चे जब दौर्दौर होते हैं तो वो टेबल, लैट, डिल्बर्ड की पीटकर मनचाही आवाज़ निकालने का कौशिश करते हैं। वह नास्कौर अपने ही गतिविधियों में मगान रहते हैं। बरसात में कागज का नाव बनाकर चलाना, जानवरों की आवाज़ का नकल करना, चित्र बनाना इयादि कार्यों में जूद- ए जूद भी रहते हैं। इस कार्य में उन्हें मजा आता है।

इस तरह बच्चे खेल- खेल में कई ज्ञानकारीयों में हासिल कर लेते हैं। जब शिक्षण कार्य शिक्षक के द्वारा होता है तब बच्चे उबात महसूस करते हैं कला समीकृत शिक्षा में बच्चों की कला के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। इसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और कलाकृतियों का आनंदमय माहील में सीखते हैं। इससे उनका संसानात्मक क्षमता का विकास होता है।

[इकाई - २ = दृश्य कला]

* दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ के व शैक्षक उपयोगिता

दृश्य कला पाठ्यचर्चा का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह दृश्य प्रकृति का हीता है, अत्रीत इसे देखा जा सकता है जैसे- फोटोग्राफी, दृश्य, चित्रकला, कौलाज, निर्माण इत्यादि। भौतिक कला के एक मुख्य ग्राह के रूप में दृश्य कला को माना जाता है। ऐसी कला जिसमें भौदर्थी की अपेक्षा की भौतिक कला कहलाता है। साथ ही इसे हक्कतकला के रूप में भी देखा जाता है। क्योंकि यह हाश से बनाया जाता है।

विद्यार्थीयों के लिए यह कितना लाभदायक है। इसके लिए आंकड़ों पर आधारित प्रमाण की जरूरत नहीं है। इस कला की व्यक्तिगत वर्चों का विकास हीता है। लैकिन इसे मापा नहीं जा सकता है। कल्पनात्मक माध्यम से वर्चे अपने विचारों, ज्ञावों की क्षरिता भी स्वेच्छा कर पाते हैं। उनमें आमतौर पर कौशल का विकास हीता है। इससे वर्चों के कार्य में अंतर्भूत आता है। उनमें कृजनात्मकता का विकास हीता है। वर्चों इस तरह से शूद से कर के लुह कीजते हैं, तो उन्हें ये बहुत बहुत दिनों तक शृमण रहता है। इससे उनके शृमण शिक्षित का विकास हीता है। इस तरह से दृश्य कला शिक्षा में उपयोगी ही उपयोगी है।

* दृश्य कला संबंधी कला अनुभव

* दृश्य कलाओं के विविध प्रकार कंव संबंधित सामग्री की परिचय एवं विकास : यथा - चित्र बनाना, मुख्याला, मिश्र इमेज, कागज कंव क्षेत्रों से सामग्री निम्नांतर

दृश्य कलाएँ दो प्रकार की होती हैं -

A) दृश्य आयामी - इस कला का प्रयोग सपाट धरातल, कागज, काठ, जमीन आदि पर किया जाता है।

i) आईच्छन् कंव चित्रांकन - कला में ईच्छांकन कंव चित्रांकन का स्थान महत्वपूर्ण है। ईच्छांकन में बालक अपनी मानसिक कल्पना शक्ति द्वारा विभिन्न प्रकार का ईच्छा बोचता है और विभिन्न चित्रों का निर्माण करता है। अपनी कल्पना, विचारों, भावों तथा अनुभूतियों को प्रेसिल द्वारा बनाकर अभियंता करता है। इसमें विद्याशी विभिन्न प्रकार का रंग भी मारते हैं।

ii) दपाई कला - कला की अभियर्थिकता को दपाई द्वारा नियमित जाता है। दपाई कला के द्वारा एक सतह पर उनीं चित्र की छब्बी दूसरे सतह पर दापा जाता है। जैसे - हल्लौल दपाई, ठपा लगाना, हाथ दृपना इत्यादि

iii) कोलाज बनाना - कला के विभिन्न रूपों द्वारा द्वारा अपनी कल्पना के व्यवहार करता है। कोलाज में वास्तविक विभिन्न तरह के चित्रों को छेदना कर एक जगह सजाते हैं। तथा उसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देते हैं। प्राचीनकाल से यह कागजी कोलाज बहुत उपयोगी और बोधक होता है।

8) त्रिआशामी - यह किंवाकलाप तीन आशामों (त्रिष्णाई, चौड़ाई, और चाई) में निर्मित कलाकृतियों को सजाने में प्रयोग किया जाता है। जैसे -

j) मृतिका प्रतिरूपण - मृतिका प्रतिरूपण कला द्वारा बालक अपनी कल्पना तथा भूजनात्मकता के अल्लसार मिट्टी को रूप प्रदान करता है। यदि बालक ओष्ठक सूजनशील होता है तो वह मिट्टी में जान डाल देता है। मृतिका प्रतिरूपण के बाद उस आकृति को देखकर लामने वाला उसे बनाने वाले की कल्पना को समझ पाता है।

i) मुख्योटा निर्माण कला - इस कला द्वारा बालक किसी कागज या गुणवारी को एक आकृति देता है। किसी त्वेन कागज को मुख्योटा की आकृति देकर उसे छोड़ा सजाकर उसे मुर्ति रूप बनाया जा सकता है।

विभिन्न मुख्योंव द्वारा बिन्न-बिन्न कीय तथा
रूपरेखा को दर्शिया जाता है।

- i) प्रतिरूपण (मॉडल) बनाना - इसके द्वारा ग्रामक
की कल्पना तथा वृजनामाकरण की जाँच होती है।
ग्रामक विभिन्न पुश्पनी सूर्ति वस्तुओं को इकट्ठा
कर उसके कोड़ी नथा प्रतिरूप तैयार करते हैं।
जिससे उनका जीव और कल्पना प्रस्तुत
होता है।

इकाई - ३ प्रदर्शन कला

* प्रदर्शन कला : अवधारणामें समझ रुप्त उपर्योगिता

चित्रांकन, नृत्य, नाटक, रुकंकी, शित्पकारी आदि
 इनमें से किसी भी रूप द्वारा अपनी मावनाओं
 को व्यक्त करना कला कहलाता है तथा इन
 सभी कलाओं को भी प्रदर्शित करना, प्रदर्शन
 कला कहलाता है यह कि ऐसा माध्यम है जो
 सभी सीमाओं व बंद्धनों से मुक्त है। इसे किसी-
 न- किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए
 अपनाया जाता है यह तो कि पाठ्यचार्य, शास्त्रीय,
 नवीन, प्राचीन सभी वर्णों को उपनें में समीकृत
 है यह कि ऐसा कार्य है, जिसके द्वारा
 छात्रों को अपनी जिकासा, रूचियों, मावनाओं आदि
 को संतुष्ट व विकसित करने का चर्चपूर अवसर
 प्राप्त होते हैं। प्रदर्शन कला के अंतर्गत सभी कलाएँ
 समाहित हैं, जिनमें आंगक, वांचक व आहार और
 सात्रिक के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता
 है। साधारणतः जिनमें दङ्डा, झुना या प्रदर्शित किया
 जा सके वे सभी कलाएँ प्रदर्शन कला के रूप
 में शामिल किया जा सकता है यह कला
 शिक्षार्थियों के शाश्वतिक, मानसिक, जांचींगक एवं
 आध्यात्मिक विकास का आधार है। इसके माध्यम
 से विचार एवं मावनाओं की सशक्त अिग्निति
 होती है। साथ ही वर्त्तों में आत्मविश्वास का
 विकास होता है।

* प्रदर्शन कला संबंधी कला अनुभव

* प्रदर्शन कला के विविध प्रकार क्यों उनकी तैयारी

A) संगीत - संगीत द्वारा मानव अपने भाव को
उद्घाटन करता है। अपने भाव को उद्घाटन करने
के लिए कलाकार अपनी आवाज का सहारा
लेता है।

हमारे जीवन के पा-पा जो संगीत च्यात हैं। संगीत के इन प्रकृति में ग़िर्जन-ज़िर्जन रूपों
में बिष्णु देखे हैं। चिह्नियों के कलरेव, कौयल की
झुक, बाँरश की क्षमक्षम, झटुनों की क्षरक्षर,
बलशाती नदियों इठलाती हवाएँ सभी संगीत के
ही रूप हैं। संगीत हमारे जीवन का अहम हिस्सा
है। कोई भी त्योहार या उत्सवों बिना संगीत
का पूरा नहीं होता है। संगीत के भी कई रूप
होते हैं - जैसे भीड़ी, बालगीत, लोकगीत, भजन
इत्यादि।

Q) नृत्य - ऐसी मान्यता है कि नृत्य मनुष्य की स्वेच्छा करने की इच्छा का प्रथम सौपान है। नृत्य की प्रेशण मनुष्य को प्रकृति और जीवन से मिली ही स्थ, तात्पर्य शाश्वत गतियों को (नृत्य) कहते हैं। नृत्य के बीच रूप है। जैसे - लोक शास्त्रीय नृत्य, स्वेच्छा नृत्य, उत्तम नृत्य इत्यादि - ~

⇒ भोक्तृनृत्य - नृत्य के बीच प्रकार जो क्षेत्रीयता से रखे गए हैं लोक नृत्य कहलाता है। वर्तमान समय में तीव्र गति से मार्गाती - दौड़ती दुनिया ने अपने रंगों में रखे गए इन लोक कक्षाओं को अपने पैरों तले रौदने का काम किया है। हम अपनी पारम्परिक विश्वासीत को सुलगा जा रहे हैं। लोकन अब उसे पुनः अपनी पुरानी पहचान देनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा में इन लोक परम्पराओं को शास्त्रिय किया जाए। और उन्हें को इसके प्रति संवेदनशील बनाया जाए।

बिहार के लोक नृत्यों की सूची काफी लम्बी है। कुछ महत्वपूर्ण निम्नलिखित है :-

1.) नारदी - यह एक कीर्तनिया नाम है। इसमें परम्परागत साज सूदंगा रुप झाल का प्रयोग किया जाता है। कीर्तनकार इस नृत्य के दौशन विभिन्न प्रकार का स्वांग किया करते हैं।

2.) मांझी नृत्य - नारदी में नाविकों द्वारा गह गीत नृत्य मुद्रा में पाया जाता है।

- 3.) घो-घो शनी - होटे-होटे बरचों का गैल, जिसे भौक शैली में घो-घो शनी कहा जाता है। इस नृत्य में एक लड़की बीच में रहती है तथा चारों तरफ से लड़ाकयां गैल घोर बनाकर गीत गाती हैं और झूमती हैं।
- 4.) धन कटनी - फसल कट जाने के बाद किसान सपरिवार खुशियों मनाता हुआ गाता और नाचता है। जो धन कटनी नाम से जाना जाता है।
- 5.) क्षिक्षण - यह मिथिला का बहुत ही लोकप्रिय लोक नृत्य है जिसे दुगापूजा के अवसर पर महिलाओं के द्वारा किया जाता है।
- 6.) इरनी-बिरनी - यह लोक नृत्य अंगिका का एक प्रमुख नृत्य है। इस नृत्य की विषयवस्तु पति-पत्नी के बीच मनमुठाव है।
- 7.) करशी - यह सावन के महीने में गाया और खेला जाने वाला नृत्य नाटक है। जो सावन के मुहावने मौसम की और भी मुहावना करता है।
- 8.) झरणी - मुसल्तमानों द्वारा मुहरिम के अवसर पर झूमते हुए गाया जाने वाला एक प्रकार का नृत्य और गीत है।

⇒ शास्त्रीय नृत्य - यह नृत्य अपने अंगिमा सिद्धांतों और शास्त्रों के नियमों को कड़ादि से पालन करते हैं। शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य के बीच मुख्य अंतर इनके नियम बहुत कंव विवरतार का है। मारतीय शास्त्रीय नृत्य के तीन मुख्य अवयव हैं -

- 1.) ब्लृत - इसके मुख्यतः दी रितर्सी है, पहला ताल कहलाता है जो सामग्री के सापन की प्रदर्शित करता है। जबकि दूसरा तथा है जो गति की दिखाता है। इसमें शारीरिक गतिशीलता कंव सौंदर्य प्रदर्शित होता है परंतु रस और माव का अभाव होता है। ब्लृत दो प्रकार के होते हैं।
 - a) "ताउडव" जिसमें बल प्रधान है।
 - b) "लाट्य" जिसमें शोभा प्रधान है।

- 2.) नृत्य - नृत्य में रस और माव प्रधान है। इसके नीं रस होते हैं - गंगार रस, हास्य रस, करूणा रस, रौद्र रस, वीर रस, भयंकर रस, विभव रस, अद्भुत रस और शांत रस। और दो माव होते हैं। एक ताँडव जो शिव के रौद्र पौरुष माव को प्रदर्शित करता है जबकि दूसरा "लाट्य" है जो शिव की पत्नी पार्वती के भयात्मक लालच का प्रतिनिधित्व करता है।

- 3.) नाट्य - सरत मुनि के अनुसार "नाट्य" शब्द का अर्थ है वैसा प्रदर्शन कला जिसमें नाटक, संगीत, नृत्य के द्वारा रस और सौंदर्यबीद्य का मिशण हो। नाट्य, आमनथ की मदद से प्रस्तुत

की जाती है। अभिनव के मुख्य चार अंग हैं—
 a) आंगिक - शाश्वतिक अंग संचालन द्वारा माव की अभिनविकत करना।

b) वांचक - संवाद संप्रेषण।

c) आहारी - मंच संज्ञा, वस्त्र, आमूषण इंवं सेक्स-अप।

d) सांत्रिक - आंत्रिक माव या एवेंट्रिक्स के माव का प्रदर्शन।

⇒ स्टैंडनार्टमाक न्टर्ट्य वर्तमान समय में न्टर्ट्य की कई शौलियों विकसित हो गई हैं।

जिसमें संसार की कई न्टर्ट्यों विद्याओं का

सम्बन्ध दिखाई पड़ता है। हम यी वी पर कई

न्टर्ट्य प्रतिशोधिता देखते हैं। इसमें दिखाई

जाने वाला उत्पादात् न्टर्ट्य न तो लोकन्टर्ट्य होते हैं और न ही शास्त्रीय न्टर्ट्य। इन्हें

स्टैंडनार्टमाक न्टर्ट्य की गोपी में रखा जाता

है। जैसे - शैबूट न्टर्ट्य, बैंक डॉस, हीप-होप,

फ्लूजन इत्यादि। मार्तीय निसनेमा इस

प्रकार के न्टर्ट्य शैली का जन-मदाता माना

जाता है। इसमें कलाकारों की क्षमता और

कुछ नया करने की जज्बा दिखाई पड़ता है।

वर्चों पर यह पूर्णवशाली असर डालता

हो जाता है। इससे स्टैंडनार्टमाकता का विकास

भी होता है। और यह अटदा भी है। किंतु

हमें आद्वानकता के साथ-साथ अपने

पारंपरिक न्टर्ट्यों पे भी ध्यान देने का

अवश्यकता है। यह हमारा दोषित है कि

हम अपने विरासत को बचा कर रहे।

c) रंगकर्म (नाटक) -

यह कला अभिनन्य कला है। इसमें किसी सी रचना को गवण तथा इटिट दोनों ही तरह से दर्शक के सामने प्रस्तुत किया जाता है। क्योंकि इसे देख और सुन दोनों सकते हैं, लौग इससे जुड़ पाते हैं। हीट-हीट बच्चों की मीनाटक देखना व करना दोनों अच्छा लगता है। विद्यालयों में समाज-समग्र पर धृति घटनाओं, ऐतिहासिक घटनाएँ, सामाजिक जीवन, भूटाचार, सामाजिक शुश्राव तथा आधिक-राजनीतिक घटनाओं पर आधारित रंगकर्म का आग्रीजन किया जाता है। बच्चे इसमें बद-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इसके द्वारा बच्चों को मनोरंजन तो होता ही साथ-ही साथ उन्हें बहुत सारी जानकारियों की प्राप्त होता है। इसके द्वारा उनमें विभिन्न प्रकार की कौशलों का भी विकास होता है जो कि नियन्त्रित है :-

i) कल्पना करना - अभिनन्य करने से पहले बच्चे कल्पना करते हैं कि वे इसे किस तरह से बेहतर बना सकते हैं। यिससे उनमें नर-नर विचार उत्पन्न होते हैं। इन विचारों का प्रयोग कर वे अपने अभिनन्य की कल्पना करते हैं। ज्ञान इकठ्ठा करने के लिए कल्पना शीलता की बहुत आवश्यकता होती है और रंगकर्म कल्पना शीलता को प्रयोग करने का चर्चपूर अवसर प्रदान करता है।

ii) सहनशीलता संव संवेदनों का विकास - नाटक करते समय बच्चे अलगा-अलगा संस्कृति, अलगा-अलग परिवर्षों वाली जिंदगी जी रहे होते हैं। इसके द्वारा वह उसे महसूस करते हैं, उससे जुड़ते हैं

और समझते हैं। इससे उनमें विचान्न लोगों के प्रति सहनशीलता एवं संवेदना का विकास होता है।

- iii) सहयोग की मावना - रंगकर्म एवं समृद्ध कार्य है। यह अकेले में नहीं किया जा सकता है। नाटक की तैयारी के दौरान वो इस बात को समझ पाते हैं कि कभी मिलकर ही अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।
- iv) रुकायाता - नाटक की तैयारी के समय पात्र की पटकथा की लाइनों उसे बोलने की तरीकी, भावों पर ध्यान देना होता है। जिससे बच्चों में रुकायाता का भावना जागृत होता है।
- v) सम्पैषण कौशल का विकास - इससे बच्चों की अभियांत्रिकी का बढ़ावा मिलता है। वो सफ-सफ, शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलना सीख जाते हैं। वाक्यों की लगबड़ में बोलने का अनुभास हो जाता है।
- vi) समस्था का हल दूड़ना - नाटक से सान दृढ़ ची होता है। यह धृति धृत्नाओं व तर्हों पर आधारित होता है। जिससे बच्चों का सुमझ विकसित होता है। साथ ही रंगकर्म के दौरान कई समस्था आने पर वो तात्कालिक समाधान हेतु प्रतिक्रिया करते हैं। इससे ची उनका मस्तिष्क का विकास होता है।

vii) मनोरंजन - यह बच्चों को खेल जैसा लगाता है। इसे वह बीज या दवाष जैसा नहीं लेते हैं। अल्प-अलग पश्च का रोल निभाना उन्हें पसंद होता है।

viii) सावात्मक विकास - इस दौरान बच्चों को विचान्न गतिविधियों द्वारा सावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। जिससे वो तनाव पर नियंत्रण करना, शुश्राओं को जाहिर करना सीख जाते हैं।

ix) स्मरण शक्ति को सुट्टड़ करना - इस वक्त बच्चों की संवाद को आद करना होता है। साथ ही अपने सांगियों के संवादी को सीध्यान में रखना होता है। संवादी का क्रम, कहा छढ़ा होकर बोलना है, कैसे बोलना है, इन सब बातों की स्मरण कर रखना होता है। जिससे उनका स्मरण शक्ति सुट्टड़ होता है।

x) सामाजिक जागरूकता - विद्यालय में समानता : धीरे घटनाओं, ऐतिहासिक कहानियों, सामाजिक कुरीतियों, समाज से जुड़ी संस्कृति पर आधारित नाटक का आयोजन किया जाता है। जिससे वो समाज से जुड़ी बातों को समझ पाते हैं। उनमें अच्छा - बुरा का समझ विकसित होता है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि यह बच्चों के सर्विंगिण विकास में अहम मुग्धिका निभाता है। इसीलिए यह आवश्यक है कि विद्यालय में विचान्न अवसरों पर नाटक का आयोजन किया जाना चाहिए।

इकाई-4 : कला अनुमति का शिक्षण में

कृजनात्मक प्रयोग

* 'सीखने की योजना' और कला समीकृत शिक्षा :
प्रस्तुति बिन्दु एवं चुनौतियाँ

बच्चों के अनुमति सीखने के विभिन्न पक्षों में सहायता करता है। तथा कला के विभिन्न आशाओं को अग्र रूप साथ समीकृत करते हुए वर्ग-कक्ष की प्रक्रियाओं का संचालन होते हैं। बच्चों को कीरणी संरल, सहज और रोचक हो जाता है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सीखने की योजना की महत्वपूर्ण सूचीकार होती है। सीखने की योजना हमारी तमाम जानकारियों का व्यौवर्श होता है। जिसके माध्यम से हम वर्ग कक्ष की प्रक्रियाओं को व्यवस्थित तरीके से संचालित कर सकते हैं। पूर्व योजना बना लेने से कक्ष-कक्ष संचालित करने में परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है। परंतु सीखने की योजना में लचीला-पन होना चाहिए। सीखने की योजना में व्यानीय संसाधनों और बच्चों के परिवेश का इधान रखना चाहिए। इसमें कला समीकृत संसाधनों एवं अनुमति का समावेश होना चाहिए। कला समीकृत सीखने की योजना में निम्न बातों का इधान रखना चाहिए -

i) सामान्य जानकारियों को दर्शि करना - कक्ष का नाम, विषय, शीर्षक, बच्चों की संख्या आदि

ii) पूर्व अनुमति/योग - इस बात का इधान रखना

याहिर कि इस कक्षा या उम्म के बचों से किस तरह का कला कराया जा सकता है।

iii) कला अनुभव की दूसरे विषयों से जोड़ना - कला समौक्त शिक्षा विभान्न विषयों की आपस में जोड़ने का पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। साधा, गांणत, पर्यावरण और ग्रन्थन सभी विषयों में के सीखने-सिखाने में कला के विभान्न एवरपों की शामिल किया जाना चाहिए।

कला समौक्त शिक्षा हेतु शिक्षाकों को विशेष दर्शन देना होता है। विभान्न विषय-वस्तुओं के लिए कला का कौन-सा रूप का प्रयोग किया जाए। इसकी चौजना शिक्षक को पूर्व ही अंजना बना लेना होता है। इस विषय द्वारा बच्चों के सामने विषय-वस्तु प्रस्तुत करना आसान होता है। किंतु इसमें समय आधिक लगता है। इसमें समय की ज्यादा बरबादी न हो, इसका यास उच्चात्त शिक्षकों को रखना होता है। बच्चों की इस ज्ञान से भी अवगत कराना होता है कि वी कला समाजिकों का सटपर्याप्त करें।

* विज्ञान कला सामग्री का शिक्षण से प्रयोग : विषयों की विषयवस्तु के संदर्भ में सीखने की गौणना कंत क्रियान्वयन

अलग - अलग विषयों में विज्ञान कला सामग्री का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

→ विज्ञान से प्रकृति से सहज उपलब्ध सामग्री फूल, पत्तियाँ, फल इत्यादि छारा हम बच्चों ने इसकी समझ लियी सत कर सकते हैं।

→ सामाजिक विज्ञान के लिए उल्लेख में प्रयोग किया जा सकता है। बच्चों द्वारा चित्र सी बनवाया जा सकता है। जिसके लिए उन्हें कागज और

कलर का उपयोग होगा।

→ प्राणित में गिनती सीखाने के लिए विज्ञान आकर्ष के वस्तुओं का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे - बच्चों को दस चिलींनी दे दिए जाएँगे और उन्हें गिनती करने की जीता जाए।

* विद्यालय के मनन, जगह, समय और गतिविधि में कला अनुभव के समावेश के तरीके

कला सृजनात्मकता का प्रतीक है। प्रारंभिक रूप से विद्यार्थियों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए दिशा देने में इसमें अपार संभावनाएँ हैं। बच्चों को अपने विद्यालय से खास लिंग दी जाता है। विद्यालयों के दिवारों पर रंग - चिह्न - चित्र बना ही तो उन्हें बहुत पसंद आता है। प्रारंभिक रूप से विद्यालय मनन के पै फल - फूल का चित्र, कविताओं के उक्से संबंधित चित्र

चित्र बनवाया जा सकता है जिससे बच्चे कला के प्रति प्रोत्साहित होंगे। और विद्यालय की भी जुड़ पारेंगे। विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के कूल के पेड़ गमलों में लगा होना चाहिए। और इसे व्यवस्थित ढंग से रखना चाहिए ताकि बच्चों को यह आकर्षक भर्गी विभिन्न अवसरों पर गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए।

* सीखने-सिखाने में कला अनुभव के प्रमाणी समावेश हेतु शिक्षक एवं विद्यालय की सुविधा

विद्यालय और शिक्षक बच्चों के जिंदगी का अहम हिस्सा होते हैं। शिक्षक को वो अपना आदर्श मानते हैं। विद्यालय में वो अपना ज्यादातर समय व्यतीत करते हैं। विद्यालयी परिवेश को उनपे ज्यादा असर होता है। और वो शिक्षक के बातों को महत्व देते हैं। ऐसे में विद्यालय और शिक्षक का यह कर्तव्य बनता है कि वो विद्यालयी परिवेश को कलात्मक बनाए। बच्चों को कला के लिए प्रोत्साहित करें। विभिन्न अवसरों, राष्ट्रीय त्योहारों पर गतिविधियों का आयोजन करें। तथा बच्चों को अवतंगता दे कि वो अपने मन पसेद किया में आजा ले। इस तरह के आयोजन से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।

इकाई-5 कला समीकृत शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन

* कला समीकृत शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन; अवधारणात्मक समझ, बच्चों के सह-शैक्षिक मूल्यांकन में सूमिका, क्रियान्वयन के दोरान चाहे रखे जानेवाले प्रमुख बिन्दु

आकलन का प्रक्रिया है जो कला समीकृत शिक्षा के साथ-साथ चलता है। इसके द्वारा शिक्षकों को शोत होता है कि वो बच्चों को जो बता रहे हैं, वो बच्चे समझ रहे हैं या नहीं। इसके द्वारा शिक्षकों को बच्चों के मानसिक क्षेत्र का जीवन होता है जिससे उन्हें शिक्षण-आधारमें सहायता मिलता है। वो बच्चे के क्षेत्र को देखते हुए उन्हें उस विषय-कठुन का ज्ञान देते हैं। और अपने आधारमें उनके हिस्साएँ से उदाहरणों की शारीरिक करते हैं। आकलन की प्रक्रिया में बच्चों की मार्कस या ग्रेड नहीं दिया जाता है।

और मूल्यांकन का ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा यह रोत किया जाता है कि शिक्षण उद्देश्यों का पूर्ण हुआ है या नहीं। यह प्रक्रिया विभिन्न अवधियों पर किया जाते हैं जैसे - मानसिक, विधिक, इत्यादि। इसके द्वारा शिक्षकों को छात्रों की कमियों का पता चलता है। इसके बाद उन्हें दूसरे करने के बहुतर क्षय के कार्य करने को अपने आप को तैयार कर पाते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों की मार्कस और ग्रेड दिया जाता है।

कला के क्षेत्र में इसका जीवंतीय महत्व है।
व्यापारिक बच्चे अपने किमायों को जान पास्ये।
और तभी वो सही दृश्या में कार्य करेगा।

कला के क्षेत्र में सूच्यांकन के समय
निम्न बातें पर ध्यान देना चाहिए -

- i) कार्य की लम्ज़ा
- ii) कौशलों की प्राप्ति
- iii) कार्य के प्रति निर्देश
- iv) स्ट्रेजनात्मकता
- v) जिज्ञासा व आत्मविश्वास
- vi) आत्म सूच्यांकन की गोप्यता का विकास

* आकलन एवं सूच्यांकन के संकेतक : अर्थ,
दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला के संदर्भ में

आकलन एवं सूच्यांकन के संकेतक का अर्थ
के बच्चों के विचारन क्षेत्रों का अवलोकन
करना। जैसे - सहमार्गता, प्रतिकृत्या, समझ
अभियोगित, स्ट्रेजनात्मका इत्यादि। इसमें
अलग - अलग संकेतों के लिए कई अंतर
बनाए जाते हैं। जिसके आधार पर उनका
स्कोरिंग किया जाता है जैसे - ठीक-ठाक,
अच्छा, बहुत अच्छा इत्यादि। इस संकेतों
के माध्यम से हम बच्चों के सीखने की
नियंत्रितता को आकलन कर सकते हैं। और
बच्चे जी इस आधार पर अपने कार्य
क्रामाता के विकास हेतु कार्य कर पाते हैं।

⇒ दृश्यकला में संकेतक आधारित मूल्यांकन - इसके अंतर्गत हम दो संकेतकों का उपयोग कर सकते हैं और इनके तीन रूपरेखाएँ बना सकते हैं।

<u>संकेतक</u>	<u>पहला रूपरेखा</u>	<u>दूसरा रूपरेखा</u>	<u>तीसरा रूपरेखा</u>
1.) सहभागिता	व्यस्त लैंडिन आधिक उच्चान नहीं	पुरुष उच्चान से	आनंदपूर्वक
2.) अभिव्यक्ति	अनुकरणात्मक	प्रथोगात्मक	संजनात्मक

⇒ प्रदर्शन कला में संकेतक आधारित मूल्यांकन - संकेतक, और रूपरेखाओं का उपयोग कर सकते हैं।

<u>संकेतक</u>	<u>पहला रूपरेखा</u>	<u>दूसरा रूपरेखा</u>	<u>तीसरा रूपरेखा</u>
1.) सहभागिता	व्यस्त लैंडिन आधिक उच्चान नहीं	पुरुष उच्चान से	आनंदपूर्वक
2.) अभिव्यक्ति	अनुकरणात्मक	प्रथोगात्मक	संजनात्मक
3.) प्रतीक्षा	उदासीन, निरावर्तुक	रुचि रखने वाला	विश्वेष- पात्रात्मक

इस आधार पर बच्चों की मनःरिप्रति, मनोव्यावरण, अनुमूलिक प्रदर्शन को समझा जा सकता है।

* कला में मूल्यांकन के विभिन्न उपायों
संघर्ष तकनीकों की समझः अवलोकन
(आबज्ञवेशन), सूची, परिचयाज्ञना कार्य,
पौर्णफॉलशो, रेटिंग + कला घटना वृत्तांत
(एनेक डॉक्ट्रिन) इकाई, प्रदर्शन (डिस्प्ले
व प्रेजेंटेशन) आदि

कला में मूल्यांकन के लिए विभिन्न उपायों
संघर्ष तकनीकों की प्रयोग किया जाता है।

i) अवलोकन - अवलोकन का अर्थ है आबज्ञवेशन।
यह कार्य शिक्षक पढ़ाने के दैशन करते
हैं। वह प्राकृतिक रूप से बट्चों के
बाई में कुछ सूचनाएं इकट्ठा कर सकते
हैं। यह विभिन्न समय अवधि में
विभिन्न गतिविधियों द्वारा किया जाता है।

ii) प्रदर्शकार्य - कक्षा कार्य तथा गृहकार्य के रूप
में विषय - वर्ष हुआ आधारित कार्य करवाए
जाते हैं। इसकी प्रकृति ऐसी होती है
कि बट्चे इसे अपने से कर पाते हैं।

iii) परिचयाज्ञनार्थ - सक सत्र में बहुत सारी परिचयाज्ञनार्थ
कराई जा सकती है। इसके माध्यम से
ओंकड़ी का संग्रह और विश्लेषण किया
जाता है। इसके लिए कृत्ति क्लासिफियों
का चयन करना चाहिए जो धर्म में
आसानी से मिल जाए। जिससे अभिभावक
पर आतंकित आश्रित भाव नहीं पड़े।

- iv) पोर्टफोलियो (विद्यार्थी का फाइल) - इसमें बच्चों के डारा किए गए कार्यों का संग्रह रखा जाता है तथा उसपे टिप्पणियाँ की जाती हैं। जिसके बाद में निवेदित निकाल जाता है।
- v) चेक लिस्ट (जोंच सूची) - इसका उपयोग आकलन के दूसरी विधियों के सहायक रूप में किया जाता है। इसमें बच्चों के विभिन्न व्यवहार व क्रियाओं का उल्लेख रहता है। साथ ही टिप्पणी की सिंचा जाता है।
- vi) रिटिंग एक्सेस (अपील ऐमाना) - इसमें विद्यार्थियों के कामों की हुए गुणवत्ता दर्ज किया जाता है। नियारित मानदंडों के आधार पर गुणवत्ता तथा किया जाता है।
- vii) घटना वृत्तांत (संचयी रिकार्ड) - कक्षा में घटनाएँ होने वाली मनोदार व व्याचिक घटनाओं का वर्णन इसमें किया जाता है।
- viii) प्रदर्शन - इसमें बच्चों को कला प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाता है और शिक्षक उसका मुन्हाकरन करते हैं।
- ix) साक्षात्कार - बच्चों के साथ साक्षात्कार करने से शिक्षक बच्चे की समझ, अनुभव, व्यवहार, व्यवहार, प्रेरणा, और सीधे की प्रक्रिया को समझ पाते हैं।